रात्रि क्लास 16/10/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

यहाँ बच्चों को अनुभव भी सुनाना पड़ता है; क्योंकि यह है पढ़ाई। बाप ने समझाया है ज्ञान और भक्ति। ज्ञान अलग है भक्ति अलग है। ज्ञान को पढ़ाई कहा जाता। जिसमें एमऑबजेक्ट है। यह पढ़ाई है देवता बनने की। यह भक्ति नहीं है। देवताएँ तो बरोबर इनके राज्य में थे। स्त्री–पुरुष दोनों ही पवित्र थे। उनको कहा जाता है पवित्र दुनिया। सतयुग में भारत बहुत ही धनवान था। विलायत वाले भी आये थे तो आमदनी के लिए डेरा डाला। फिर आस्ते2 भारत की राजाई ले ली। धन के लिए ही आये थे। बहुत धन ले लिया। अनाज आदि सभी यहाँ से जाता था। भारत को अभी भूख है तो वहाँ लाखों करोड़ों टन मँगाते हैं। पहले साहुकार था। और कोई नहीं थे। झाड़ में क्लीयर दिखाई पड़ता है। कहानी होती है ना। तुम भी समझाते हो 5000 वर्ष पहले भारत में सिर्फ एक ही देवी–देवता धर्म का राज्य था। ल0ना0 छोटेपन में राधे कृष्ण थे। अभी है कलियुग। पहले सतयुग था अभी कलियुग कैसे बना। यह है कहानी। देवी–देवताओं का राज्य कहाँ गया। अभी तो रावण आसुरी राज्य है। बाप बेहद की कहानी बैठ सुनाते हैं। जो और कोई नहीं जानते। वह सभी नेती–2 कहते गये। नॉलेजफुल बाप तो एक ही बार आकर सुनाते हैं। अपना परिचय भी देते हैं और आकर कहानी भी सुनाते हैं। सतयुग में इन्हों का राज्य था। उन्हों की ही 8 पीढ़ी चली। इन्हों की हिस्ट्री जॉगराफी बाप ही सुनाते हैं। और कोई जानते ही नहीं। आठ पीढ़ी चली। फिर त्रेता में राम सीता का 12 पीढ़ी चली; क्योंकि वह दो कला कम हो गई। माया पर जीत पहन न सके। यह कहानी है ना। पवित्र देवताओं को सर्व गुण सम्पन्न.....कहा जाता है। आधा कल्प भारत पवित्र था। अभी रावण राज्य है तो अपवित्र हैं। पतित बन गये फिर देवी–देवता कह न सके। राम को क्षत्री क्यों कहा जाता है क्योंकि युद्ध के मैदान में जीत पहन रहे हैं। आधा कल्प विकारी देहअभिमानी रहे हो। सतयुग में रावण राज्य है ही नहीं। राम और रावण है ना। रामराज्य कहा जाता है ईश्वरीय राज्य को। राम कहने से ही पतित–पावन बुद्धि में आता है। स्त्री–पुरुष दोनों ही पुकारते हैं हमको आकर पावन बनाओ। बाबा हम पतित बन गये हैं फिर आकर पावन बनाओ। आत्मा पुकारती है शरीर द्वारा। तो फिर बाप आकर ज्ञान देते हैं। मनुष्य नहीं जानते। वह है शूद्र वंशी। शूद्र से ब्राह्मण, फिर ब्राह्मण से देवता। विराटरूप का चित्र भी है ना। श्री कृष्ण की भी 84 जन्मों की कहानी है। राधे की भी तो ल0ना0 के भी 84 जन्मों की कहानी है। फिर ब्रह्मा–सरस्वती के भी 84 जन्मों की कहानी कहेंगे; क्योंकि ब्राह्मण ही स्वदर्शनचक्रधारी बनते हैं। यह है लीप युग। ब्रह्म(ा) ने कितने जन्म लिये? 84। पहले कौन था? फिर गिरते2 पतित बना। यह भी पतित बना ना। फिर भाग्यशाली रथ चाहिए। भारत में पतित बनते ही हैं रावण के कारण। अभी टाइम पूरा हुआ। यह है पुरानी दुनिया तमोप्रधान आयरन एजेड। यह भी तुम समझते हो। आते तो बहुत ही हैं। फिर कोई पवित्र रहते हैं कोई फेल हो जाते हैं। फिर भी कहते हैं पवित्र न बनेंगे तो पद कैसे पावेंगे। एक बार सुना है तो स्वर्ग में जरूर आ जावेगा। पापों की सज़ा भी भोगनी पड़ती है। जो पावन थे वही पतित बने हैं। यह रिपीटशन चल रही है। तुम ब्राह्मण अभी बने हो जब कि बाप आये हैं। पहले तुम शूद्र थे। अभी ब्राह्मण बन पढ़ते हो। फिर देवता बनेंगे। फिर नीचे गिरेंगे। भारत पावन था। अभी पतित है। यह है कौरव राज्य। गीता में भी कौरव और पाण्डव है। तुम हो गुप्त सेना। अननोन वारियर्स। तुम योगबल से माया से लड़ते हो। 5 विकारों पर जीत पावेंगे तो जगत जीत बनेंगे। यह कहानी है बेहद की। 5000 वर्ष से पुरानी चीज़ कोई होती ही नहीं। सतयुगी दुनिया है फूलों का बगीचा। अभी है कलियुगी काँटों का जंगल। इनमें बड़े ते काँटे भी हैं। कलियुगी मनुष्यों ने श्रीकृष्ण को बड़े ते बड़ा काँटा बना दिया है। कहते हैं उनको 16,108 रानियाँ थीं। तो सबसे बड़ा काँटा हुआ ना। शास्त्रों में कितनी मूर्खता की बात लिख दी है। तुम जो जन्म व जन्म सुनते आये हो। वेद शास्त्र जो भी कुछ सुनते आये हैं वह भक्ति। अभी तुमको मिलता है ज्ञान। और ज्ञान मिलता ही है एकबार। कोई संस्कार ले जाते हैं तो फिर आकर ज्ञान ले सकते हैं। कोई छोटेपन में ही अच्छा समझ लेते हैं। तो समझा जाता है संस्कार ले गये हैं। तुम्हारे से जो जाते हैं तो जरूर संस्कार ले जाते हैं। फिर आकर ज्ञान लेते हैं। ओम।